सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 13 ▪ ▪ अंक : 2 ▪ ▪ 5 मई : 2016 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

वर्षीतप पारणा

साध्वी विज्ञांजनाश्रीजी का अभिनन्दन

अष्टम् पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धा सुमन

21.9.1946
जन्म :

9.5.2008
स्वर्गवास :

श्री भंवरलालजी संकलेचा

सुपुत्र श्री धरमचन्दजी संकलेचा (रासोणी) मरूधर में पादरू

विनम्रता...आत्मीयता...दिव्यता...सौम्यता...स्नेह...सद्भाव... के धनी मानवीय गरिमा को उन्नत बनाने वाले,
उच्च जीवन को आपने समग्रता एवं व्यापकता के साथ जीया तथा उसी सर्वश्रेष्ट एवं सर्वोतम को सबके साथ बांटा...
संकलेचा परिवार आपकी स्मृतियों की अनमोल विरासत को हृदय की अंतरंग गहराई से संजोये हुये है।
हम सब आपकी दिव्य आत्मा की शांति-समाधि की प्रार्थना करते है।

श्रद्धानवत :
धर्मपत्नी मोहिनी देवी
भ्राता : जुगराज, नेमीचन्द, मोतीलाल, प्रवीणकुमार
बहन-बहनोई : नाजुबाई-मोहनलालजी बागरेचा,
कमलाबाई-भंवरलालजी तातेड़
पुत्र-पुत्रवधु : ललितकुमार-ललितादेवी,
राजकुमार-संगीतादेवी, कैलाशकुमार, गौतमचन्द-शिल्पादेवी
पौत्री-जंवाई : निकिताबाई-नवीनकुमारजी बाफना
पौत्र-पौत्री : CA मनीष, मिशाल, रूचिका, काजोल, ईशीता
दौहित्रा : प्रीत बाफना

फर्म :

नवनिधि इन्टरप्राईजेज
384, मिन्ट स्ट्रीट, ऑफिस नं. 29, दूसरा माला,
चैन्नई - 600079 फोन : 044-25291795

रूपम् कलेक्शन्स
15-8-485, फिलखाना, ओमश्री सांई कॉम्पलेक्स,
हैदराबाद फोन : 040-24612258

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

गुणेहिं साहू अगुणेहिं ऽ साहू, गेण्हाहि साहूगुण मुंच ऽ साहू।
वियाणिया अपपगमप्पएणं, जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥

गुणों से साधु होता है और अगुणों से असाधु। इसलिए साधु-गुणों को (साधुता को) ग्रहण करो और असाधु-गुणों (असाधुता) का त्याग करो। आत्मा को आत्मा से जान कर जो राग और द्वेष में समभाव धारण करता है, वह पूजनीय हो जाता है।

A Person becomes a monk by virtues and a non-monk by vices. Therefore, develop all the virtues and be free from all the vices. Know your self through the self. He who maintains equanimity in all the matters of attachment and hatred becomes worthy or respect.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	04
2. गुरुदेव की कहानियाँ	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	05
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	06
5. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	08
4. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	10
6. श्रावक कामदेव	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	11
7. खंभात तीर्थ की पावन यात्रा	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	13
8. बही आनंद की बहार	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	16
8. अनुभव गीतिका	साध्वी प्रियकल्पनाश्रीजी म.सा.	18
9. समाचार दर्शन	संकलन	19-23
10. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-118	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	24
11. जहाज मंदिर पहेली 116 का उत्तर		25
12. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा.	26

दुर्ग (छत्तीसगढ़) नगरे

पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर
श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
आदि ठाणा
एवं
पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा.
पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि
का चातुर्मास प्रवेश शुभ मुहूर्त्त
वि. 2073 आषाढ़ शुक्ल 6, रविवार ता. 10 जुलाई 2016
प्रातः 8.00 बजे

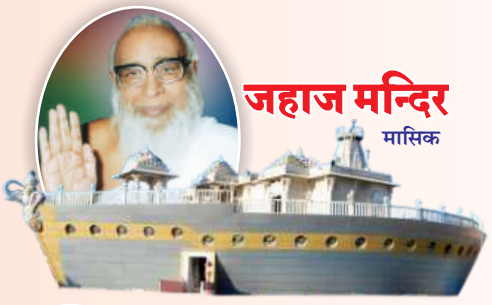

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्रीमज्जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 13 अंक : 2 5 मई 2016 मूल्य 20 रू.

संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	:	15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	:	11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	:	9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	:	7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	:	3,500 रूपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	:	3,000 रूपये
सामान्य आधा पृष्ठ	:	1,500 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

नवप्रभात

ऐसा जीवन मिलना मुश्किल हैं, जिसमें गल्तियाँ न होती हो! क्योंकि व्यक्ति पूर्ण नहीं है। उसका ज्ञान अपूर्ण है। वह अपने द्वारा होने वाली क्रिया की प्रतिक्रिया की कल्पना कर सकता है। पर जरूरी नहीं है कि वैसी ही हो। उससे उलट भी हो सकती है।

कुछ गल्तियाँ ऐसी होती हैं, जिन्हें सुधारा जा सकता है।

पर कुछ गल्तियाँ ऐसी होती हैं जो जीवन भर दंश देती हैं।

उनके समाधान का कोई उपाय नहीं होता। क्योंकि समय जा चुका होता है।

वह गलती सामान्य गलती है, जिसे दूसरों के द्वारा बताये जाने पर अहसास होता है।

पर वह गलती बहुत बडी है, जिसका अनुभव बाद में स्वयं को होता है।

उस कडवे अनुभव की फांस हर पल पीडा देती है। फिर पश्चात्ताप की अग्नि भी उसे पूर्ण शुद्ध, स्वस्थ और स्वच्छ नहीं कर पाती।

वह पीडित इसलिये नहीं होता कि किसी ने उसकी उस गलती के लिये कुछ कहा है। बल्कि वह पीडित इसलिये होता है कि वह स्वयं अपने आपको उत्तर नहीं दे पाता।

दूसरों को समझाना आसान है, पर स्वयं को समझा पाना बहुत मुश्किल है।

दूसरों को समझाने के लिये वह ललित-शब्दावली में तर्कों को समेटकर बहाना बना सकता है। उसके लिये वह मजबूरी, कर्म, नियति जैसे शब्दों का भी प्रयोग भी कर सकता है।

पर स्वयं को समझाना मुश्किल होता है। क्योंकि वह अपने सामने पूरा पारदर्शी होता है। वहाँ कुछ छिपाने को नहीं होता। वहाँ दूसरा है ही नहीं। कौन किसे किससे छिपाये?

ऐसी गलतियों के लिये वह अपने आपको भी माफ नहीं कर पाता। इसलिये जरूरी है जीवन में जागरूकता! प्रतिक्षण की जागरूकता! दशवैकालिक की गाथा में जैसा परमात्मा ने फरमाया है- हर काम यतना से करो... जयणा से करो... होशपूर्वक करो।

गुरूदेव की कहानियाँ

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

अनमोल औषधि : व्रत

स्वयं ही देख लें। वे अभी भी प्यार से प्रधानजी के उत्तरीय वस्त्र को लपेटे आनंदमग्न हो रही हैं।

पुरूष स्वयं बेवफा हो सकता है पर पत्नी की बेवफाई उसे सह्य नहीं हो सकती। राजा की त्यौरियाँ चढ़ गयी। क्रोधाधिक्य के कारण मुँह से झाग उबलने लगे।

उन्होंने हांफते हुए कहा-दासी! जानती है तूं क्या बक बक किये जा रही है! प्रमाण के अभाव में तुझें मौत की सजा भी हो सकती है।

दासी ने विनम्रता से कहा-आपकी यह दासी सहर्ष स्वीकार करेगी। राजा शयनकक्ष में पहुँचे। उसने देखा-दासी ने जो कुछ कहा था, सत्य है। उसने सन्दर्भ जानने का प्रयास नहीं किया। क्रोध से बेहाल होकर तुरंत जल्लाद को बुलाया और आदेश दिया-जाओ रानी को किसी बहाने जंगल में ले जाकर मार डालो। यही संसार है। जिस रानी के अभाव में राजा जीने की कल्पना भी नहीं कर सकता था, जिसके लिए रोम-रोम में प्यार था। आज वही इतनी अप्रिय लग रही थी, कत्ल का आदेश तक दे दिया था।

जल्लाद ज्योंही उसे जंगल में लाया, सामने नंगी तलवार देखकर रानी भयभीत हिरणी की तरह काँपने लगी। चद्दर अभी भी उसके बदन पर थी। जल्लाद ने तलवार चलायी, वह चद्दर कवच बन गयी।

जल्लाद प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। उसने कहा-देवी! राजा किसी गलतफहमी में हैं। आप किसी विश्वासनीय व्यक्ति के पास वेश परिवर्तन कर पहुँच जाओ।

रानी वेश परिवर्तन द्वारा झांझन के घर पहुँच गयी। झांझन सम्मान सहित उनको अपने आवास में ले आया।

रानी को ही सजा नहीं मिली अपितु पेथड को भी कारावास में डाल दिया गया। निर्दोष पेथड विचलित नहीं हुआ। उसे सर्वज्ञ वचनों पर पूर्ण श्रद्धा थी। उसने नमस्कार महामंत्र का जाप प्रारम्भ कर दिया।

कुछ समय बाद राजा का स्वस्थ पृष्टहस्ती मदोन्मत्त हो गया। सारे शहर में हाथी के उपद्रव से तहलका मच गया। चारों ओर चीखें ही चीखें उभरने लगी। अन्त में थककर वह गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

वह दासी जिसने चद्दर लाकर दी थी तुरंत राजा के पास पहुँची और कहा-अगर आप आदेश दें तो मैं हाथी की स्वस्थता का साधन बता सकती हूँ। राजा ने कहा-तुरंत बताओ।

दासी ने कहा-अगर पेथड शाह का वस्त्र उस पर डाल दिया जाय तो निश्चित ही यह हाथी स्वस्थ हो सकता है।

राजा कैसे विश्वास करता? पेथड के नाम से ही उसे घृणा थी परंतु दासी के आग्रह से उसने भी परीक्षा का मौका हाथ से जाने न दिया।

चद्दर ज्योंही डाली। हाथी कसमसाया और तुरंत उठ खड़ा हुआ। राजा यह चमत्कार देखकर हतप्रभ हो गया।

राजा को पेथड के चरित्र पर विश्वास करना पड़ा। वह पैदल चलकर पेथड़ के समक्ष हाजिर हुआ और क्षमा याचना करते हुए उसे सममान मुक्त कर दिया।

पेथड के उच्चस्तरीय चारित्रिक प्रभाव को देखकर उसे रानी द्वारा चद्दर लपेटने का रहस्य भी समझ में आ गया। उसकी सारी घृणा बिखर गयी। निर्दोष रानी की हत्या के पश्चात्ताप में राजा झुलसने लगा।

उचित अवसर देखकर झांझन ने रानी को राजा के समक्ष हाजिर कर दिया। राजा की खुशियाँ लौट आईं। चारों ओर उल्लास फैल गया।

पेथड को विशेष रूप से सम्मानित करते हुए राजा ने यथेष्ट वरदान माँगने को कहा-तब शाह ने पालीताना यात्रा हेतु कुछ समय के लिए अवकाश मांग लिया। राजा ने वचनबद्ध होने के कारण स्वीकार लिया। यात्रा के अन्तर्गत अपार द्रव्य राशि वितरित करते हुए 36 करोड़ का सोना प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार हेतु प्रदान किया।

प्रीत की रीत

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री श्रेयांसनाथ स्तवन

देय दान नित दीजते,
अतिदाता प्रभु स्वयमेव रे।
पात्र तुमे निज शक्तिना,
ग्राहक व्यापकमय देव रे,॥ मु.४॥

देने योग्य वस्तुओं का आप स्वयं दान करते हैं अत: आप सर्वोत्कृष्ट दाता है। आप अपनी गुणशक्ति के आधार है। उसी के ग्राहक है। उसी में आप व्याप्त है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी प्रभु के दाता गुण का विवेचन कर रहे हैं। यह सत्य है कि संसार में परमात्मा के समान कोई दानी नहीं है। परमात्मा के दान गुण का कोई सानी नहीं हो सकता क्योंकि अन्य जितने भी दानवीर है, वे अपना सर्वस्व दान में देने की अपेक्षा आंशिक ही दान देते हैं जबकि परमात्मा तो अपने सर्वस्व का दान कहते हैं। बिना मांगे उनकी करूणा सृष्टि के कण-कण में बरसती है। इतनी करूणा बरसती है कि अपनी जान तक जीवों की सुरक्षा के लिये कुर्बान कर देते हैं। धर्मरूचि अणगार ने कडवा तुम्बा इस लिये अपने पेट में पधरा दिया कि धरती पर रेंगते कीड़े मकोडे, चींटीयां बच सके। आगमों के पृष्ठ महापुरूषों के ऐसे करूणापरक दृष्टांतों से भरे पडे हैं। वे इसीलिये अपनी कुर्बानी दे सके कि जीवों के प्रति उनके हृदय में अभिन्नता थी। परमात्मा वीतराग है, यह सत्य है पर यह भी उतना ही सत्य है कि वे करूणा के सागर हैं। संसार में जितना भी शुभ घटित होता है वह सारा अरिहंत परमात्मा का ही आभारी है। संसार का प्रकाश जिस प्रकार से सूर्य का आभारी है। वैसे ही सारा शुभ परमात्मा का आभारी है। मात्र आँखें होने से ही प्रकाश नहीं हो सकता, आँखों के साथ प्रकाश भी चाहिये। प्रकाश और आँखें दोनों ही आवश्यक है। वैसे ही जीव की योग्यता और परमात्मा की करूणा इन दोनों का जब संयोजन होता है तभी जीव शुभता और शुद्धता को उपलब्ध हो सकता है। अब यहाँ यह प्रश्न उठता है कि जब परमात्मा करूणावान् है तो हम सभी पर अनुग्रह करके मोक्ष में क्यों नहीं पहुँचा देते। क्यों हम संसार में रखडे? इसका समाधान यह है कि सृष्टि के सारे चैतन्य प्राणी करूणापात्र तो है परंतु मात्र करूणापात्र होने से ही मोक्ष उपलब्ध नहीं होता। इसके लिये कुछ योग्यताऐं भी हम में विकसित होनी चाहिये। जैसे सूर्य के प्रकाश को पाने के लिये आँखें खोलनी पडती है। कक्ष के जाली-झरोखे भी खोलने होते हैं। उस कक्ष में हमें आसन भी लगाना होता है। जहाँ सूर्य किरणें आसानी से पहुँचे। ठीक उसी प्रकार प्रभु की प्रभुता को पाने के लिये परमात्मा के उपदेशों के अनुसार अपना आचरण बनाना पडता है। जीव मात्र के प्रति प्रेम भाव का विकास करना पडता है। कषायों का संपूर्णता से त्याग करना होता है। परमात्मा की उदारता के कारण हम उनके करूणापात्र बने हैं परंतु उनके अनुग्रह को पाने के लिये योग्य तो हमें ही बनना पडेगा।

अत: हमें मानना ही चाहिये कि अनंत उपकारी अरिहंत परमात्मा जैसा अपूर्व दानी कोई हो ही नहीं सकता। संयमी जीवन का जैसे ही लोकान्तिक देव निवेदन करते हैं कि तुरंत प्रभु वर्षीदान द्वारा संसार की दरिद्रता को मिटाने का उपक्रम करते हैं। संयमी जीवन का पालन करते हुए छह काया के जीवों को वे अभयदान द्वारा उपकृत करते हैं और केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद जीवों को अपनी देशना के द्वारा संसार और सिद्धि का स्वरूप समझाकर उन्हें शुद्धता की दिशा में अग्रसर करते हैं।

दान गुण में भी तीनों ही परिणमन होते हैं। दानगुण करण है, देने में प्रवृत्ति यह क्रिया है, सहकार रूप दान कार्य है और देने की प्रवृत्ति जिसके द्वारा होती है, वह कर्त्ता है।

पारिणामिक कारज तणो,
कर्ता गुण करणे नाथ रे।
अक्रिय अक्षय स्थितिमयी,
निकलंक अनंती आथरे, मु.॥५॥

पारिणामिक रूप से अव्याबाधादिक अनंत कार्यो के आप कर्त्ता है। परिणमन गुण करण है। इस प्रकार से कर्त्ता होने पर भी आप अक्रिय है, अक्षय है, स्थितिमय है, निर्दोष अनंत संपदा के स्वामी है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्‌जी आत्मा की अनंत शक्ति का ज्ञान करवाते हैं। प्रत्येक आत्मा मे अनंत अर्हता है। जिसकी समस्त योग्यता प्रकट हो जाती है, उसे अरिहंत कहते है। कोई भी आत्मा शक्तिहीन नहीं है। प्रत्येक बीज में वृक्ष की संभावना है। यह अलग मुद्दा है कि आत्मा को अपनी शक्ति का अहसास होता है अथवा नहीं। बहुत कम लोग होते हैं जिन्हें अपनी शक्ति का अहसास होता है। उन कम लोगों में से भी कम लोग अपनी शक्ति का उपयोग करते हैं। वर्तमान की खोज कहती है कि मस्तिष्कीय शक्ति का मात्र 15 प्रतिशत भाग ही उपयोगी बनता है। बाकी की शक्ति संचित ही रह जाती है। शारीरिक शक्ति भी कम नहीं हैं परंतु उसका भी उपयोग नहीं किया जाता। शरीर शास्त्री कहते हैं कि जितनी शक्ति का अधिकांश लोग उपयोग करते हैं उससे सात गुणा भाग दबा हुआ ही रह जाता है। शरीर में नाडियों में, मस्तिष्क में शक्ति का संचय रहता है। पर हमारे अज्ञान और प्रसाद से उनका न तो जागरण होता है, न उपयोग परंतु अरिहंत परमात्मा ने शक्ति जागरण के उपायों को समझ कर उन्हें समग्रता से अनावृत्त कर दिया। अनंत शक्ति का सामर्थ्य परमात्मा की बहुत बडी उपलब्धि है। साथ ही यह और मजे की बता है कि अनंतशक्ति होते हुए भी वे कर्मरहित है क्योंकि जहाँ प्रवृत्ति करने की रूचि है वहाँ पराधीनता है क्योंकि क्रियाप्रवृत्ति के लिये मन, इन्द्रियाँ, परिस्थिति आदि आवश्यक है। जहाँ पर की अपेक्षा है वहाँ आत्मा की सामर्थ्य और स्वाधीनता लुप्त हो जाती है। जो करने की भावना से मुक्त है, वे ही वास्तव में स्वाधीन है। अरिहंत प्रभु कर्तृत्व और भोक्तृत्व भाव से संपूर्णत: विरत है। करने की भावना या आकांक्षा से वे मुक्त है।

क्रिया से वही उपरत हो पाता है जिसकी अभिलाषाऐं, राग, द्वेष, विषय भोग की कामना जड से समाप्त हो गयी हो। जिसकी पाने की अभीप्सा ही शांत हो गयी है, वह क्यों कुछ करेगा?जिसकी प्रवृत्ति समाप्त है वही अनंतवीर्यवान् है और आश्चर्य तब होता है जब कुछ करने की प्रवृत्ति प्रभु में मौजूद नहीं है फिर भी वे कर्त्ता जरूर है। अर्थात् अकर्म होने पर भी वे कर्मशील है। क्योंकि परिणमन द्रव्य का स्वभाव है। चूंकि परमात्मा शुद्ध आत्म-द्रव्य है। अत: वे मात्र स्वयं के ज्ञान, दर्शन और चारित्र में ही रमण की क्रिया करते है। यहाँ परिणमन गुण करण है, करण का फल कार्य है और उस गुण की प्रवृत्ति क्रिया है। इन तीनों के कर्त्ता आप स्वयं है। आप अक्रिय भी है क्योंकि क्रिया में तो चंचलता है और सिद्ध तो अचल, अक्षय और एक ही स्थिति में स्थिर है। (क्रमश:)

चातुर्मास की घोषणा

- चौहटन जैन संघ ने पालीताणा में पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. से चातुर्मास हेतु विनम्र प्रार्थन की जिसे स्वीकृति दी गई। पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्याओं का चौहटन में चातुर्मास निश्चित किया, जिससे श्री संघ में आनंद छा गया।
- बाड़मेर खरतरगच्छ श्रीसंघ सूरत की भावभरी विनंती स्वीकार कर पूज्य आचार्यश्री ने पू. प्रवर्त्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की निश्रावर्ती पू. साध्वी री सम्यक्‌दर्शनाश्रीजी म. आदि के चातुर्मास की आज्ञा प्रदान की।
- पार्श्वमणितीर्थ, पेद्‌दतुम्बलम् ट्रस्ट मंडल की भावभरी विनंती स्वीकार कर पू. गणिनीश्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म. आदि के चातुर्मास की पू. आचार्य श्री ने आज्ञा प्रदान की।

44
संस्मरण

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

स्मृतियों के झरोखे खुले थे। दूर क्षितिज में अतीत के चित्र उभर रहे थे। पूज्य गुरुदेवश्री के साथ हम सभी उनकी इस अतीत-यात्रा के सहभागी हो रहे थे।

गुरुदेवश्री फरमा रहे थे- वि. 1992 के हुए अजीमगंज चातुर्मास का एक उपलब्धि भरा घटनाक्रम बताना तो मैं भूल ही गया। इसी वर्ष अजीमगंज समेत भारत भर के श्री संघों की विनंती स्वीकार कर पूज्य गुरुदेव गणाधीश श्री हरिसागरजी म.सा. आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होकर आचार्य जिनहरिसागरसूरिजी म. बने।

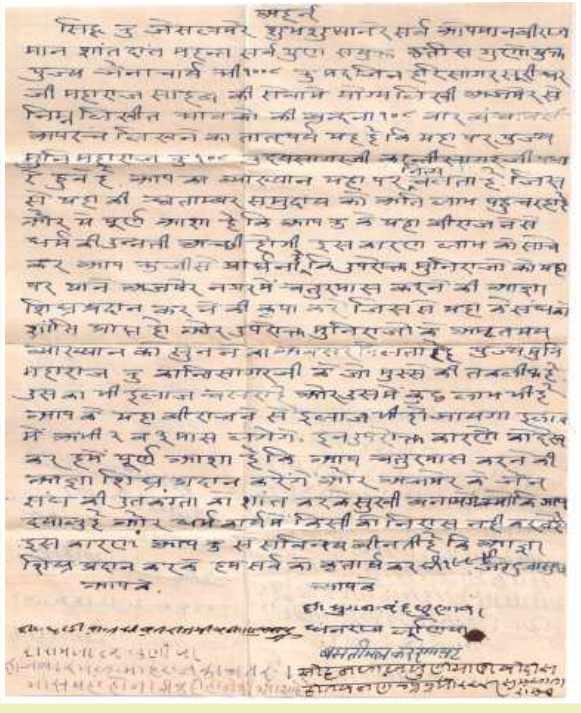

वि. सं. 1997 का चातुर्मास पूज्य गुरुदेवश्री का फलोदी था और मेरा जोधपुर! पढ़ाई के कारण अलग चातुर्मास करना पडा था। जोधपुर के चातुर्मास में संस्कृत का अभ्यास हुआ। चातुर्मास के बाद फलोदी पहुँचे क्योंकि यहाँ सुखसागर समुदाय का सम्मेलन आयोजित था। सम्मेलन बहुत अच्छा रहा था।

वि. सं. 1998 का चातुर्मास पूज्यश्री के साथ मोकलसर में हुआ। मोकलसर चातुर्मास के बाद मुझे अलग विहार करना पडा।

मेरा प्रश्न मुखर हो उठा- ऐसा क्या हुआ कि विहार अलग हुआ!

पूज्यश्री ने कहा- अस्वस्थता कारण बनी! मुझे भगंदर रोग हो गया था। उस समय इलाज के साधान हर जगह मौजूद न थे। पूज्य आचार्यश्री ने कहा- तुझे अजमेर शहर जाना होगा, वहीं इलाज संभव होगा।

पूज्य मुनि श्री उदयसागरजी म.सा. के साथ आपका विहार हुआ। चातुर्मास अजमेर हुआ। अजमेर श्री संघ की ओर से पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की सेवा में चातुर्मास की विनंती का जो पत्र दिया गया था। वह पत्र

हमारे संग्रह में है। उस पत्र से पता चलता है कि अजमेर चातुर्मास से पूर्व पूज्यश्री पधारे थे। और उनके प्रवचनों से आम जनता बहुत प्रभावित थी।

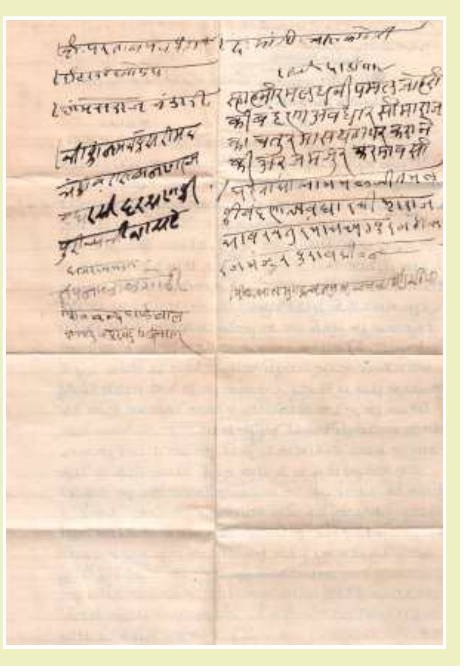

श्री सुगनचंदजी लूणावत, श्री धनराजजी लूणिया, श्री बसतीमलजी करणावट, श्री सोहनलालजी लूणिया, श्री व्रजलालजी धाडीवाल, श्री रामलालजी लूणिया, श्री परतापमलजी कोठारी, श्री हरकचंदजी गोलेच्छा, श्री यसराजजी भंडारी, श्री कानमलजी केसरीमलजी, श्री धनरूपमलजी, श्री पन्नालालजी गोठी, श्री शिवचंदजी धाडीवाल, श्री मूलचंदजी कपूरचंदजी धाडीवाल, श्री मांगीलालजी कोठारी, शा हमीरमलजी जौहरी, मेहता सोभागमलजी जीतमलजी, श्री पन्नालालजी आदि श्रावकों के हस्ताक्षर युक्त यह विनंती पत्र जैसलमेर में बिराजमान पूज्य आचार्यश्री को समर्पित किया गया था। पूज्य आचार्यश्री की आज्ञा को प्राप्त कर वि. 1999 का चातुर्मास अजमेर नगर में हुआ। दादावाडी जाना मेरा नित्यक्रम था। गुरुदेव के समाधि-स्थल पर हमारे अन्तर को समाधि प्राप्त होती थी। व्याख्यान प्राय: मेरा ही होता था। हम दोनों मुनियों में प्रेम भी बहुत था। भगंदर रोग का इलाज चल रहा था। लग रहा था कि यहाँ उसका अच्छा इलाज हो जायेगा। पर चातुर्मास उतरते उतरते लगा कि यहाँ इलाज संभव नहीं होगा। तकलीफ बढ़ती जा रही थी।

फार्म - 4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशक स्थान	–	माण्डवला, जिला जालोर (राज.)
2. प्रकाशन अवधि	–	मासिक
3. मुद्रक का नाम	–	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	–	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	–	नहीं
पता	–	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
4. प्रकाशक का नाम	–	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	–	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	–	नहीं
पता	–	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
5. सम्पादक का नाम	–	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	–	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	–	नहीं
पता	–	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
6. उनके नाम व पते जो समाचार पत्रें के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के 1% से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।		श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला, जिला-जालौर (राज.)

मैं डॉ. यू. सी. जैन, जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर (राज.) द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

डॉ. यू. सी. जैन

दिनांक : 05-05-2016

प्रकाशक के हस्ताक्षर

35
श्रमण चिंतन

संयम में सुख ..... असंयम में दु:ख

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

अमरोवमं जाणिय सुखमुत्तमं,
रयाण परिआइ तहाऽरयाणं।।
निरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं,
रमिज्ज तम्हा परिआइ पंडिए।।11।।

जो साधु संयम में रमण करता है, उसे संयम स्वर्ग से भी अधिक सुखपूर्ण लगता है पर जिस साधु को सयंम में रस नहीं होता, उसे संयम नरक के समान दु:खपूर्ण लगता है।

संसार में जिस प्रकार सुख और दु:ख की अनुभूतियाँ होती हैं, वैसे ही संयम में भी सुख तथा दु:ख के अनुभव होते हैं।

एक साधु जहाँ तप में रस की अनुभूति करता है, वहीं एक साधु को तप कष्टप्रद मालूम होता है।

एक साधु विहार और केशलुंचन में आनंद का अहसास करता है तो दूसरा साधु उसी में पीडा के आँसू बहाता है।

एक की दृष्टि वर्तमान पर टिकी हुई है और दूसरे की भविष्य पर। उन पदार्थों का भला क्या सुख, जो भोग में मधुर और फल में कडवे हैं।

मूल्य तो उन्हीं पदार्थों का है जो भोग में भले ही दु:खद लगे पर फल की अपेक्षा से सुखद हो।

संयम में शिथिल साधु वर्तमान को देखता है जबकि संयम में अनुरक्त साधु भविष्य को देखता है।

ओह! प्रतिदिन रूक्ष-तिक्ष आहार...घर घर में परिभ्रमण... विहार की प्रतिकूलताएँ...शीतोष्ण परीषह... निरस ज्ञान-चर्या...कठोर चारित्र धर्म... इस प्रकार का जीवन जीने से तो संसार में जीना ही अच्छा है। उपरोक्त विचार विचलित मन वाला साधु करता है।

ठीक इसके विपरीत विचार संयम में अप्रमत्त विहारी उस मुनि के होते हैं, जो जिनाज्ञा एवं गुर्वाज्ञा के पालन में प्रेम की अभिव्यक्ति देता है। प्रतिकूलता में समता और अनुकूलता में विरक्ति का पोषण करता है।

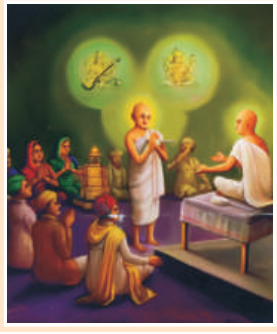

उत्तराध्ययन सूत्र के औरभ्रीय अध्ययन का एक संवाद यहाँ मननीय है-

एक घर में एलक (मेंढे) और गाय का साथ-साथ पालन-पोषण होता था। मेंढे को मधुर तथा स्वच्छ जल और हरे भरे जौ का पर्याप्त आहार दिया जाता पर गाय की कोई सार संभाल नहीं की जाती।

माँ से बछडे ने पूछा-माँ! ऐसा भेदभाव क्यों?

गाय बोली- यह भेदभाव भी सुखकारक है क्योंकि जिसको भरपेट अच्छा आहार दिया जा रहा है, उसे मोटा करके काटकर मेहमानों को परोस दिया जायेगा! जबकि हम सूखी घास खाकर भी सुखी हैं क्योंकि लम्बे काल तक सुख से जीयेंगे।

तत्त्व को यथार्थ रूप से जानने वाला साधु संयम जीवन के कष्टों को भी हँसते-हँसते झेल लेता है क्योंकि वह परिणामस्वरूप स्वर्ग की सम्पदा और सिद्धत्व के सुख पर निगाहें स्थिर करता है।

पण्डित (तत्त्वज्ञ) मुनि संयम के कष्ट भी देवलोक के सुख तुल्य प्रतीत होते है तभी तो...

1. खंधक मुनि समता रखकर शरीर की चमडी उतरवा देते हैं।
2. गजसुकुमाल मुनि अंगारों को मुक्ति के दीप में बदल देते हैं।
3. मेतारज मुनि प्राणलेवा उपसर्ग को अमरता का पाथेय बना लेते हैं।

याद रखना मुनि! उस पदार्थ से बचकर रहना जो दिखने सुन्दर हो पर परिणाम में भयानक हो। उपर की सुन्दर डिजाईन और मखमली पेकिंग देखकर मोहित होना मूर्खता और मूढता की निशानी है और भीतर छिपे माल पर नजर डालना समझदारी की पहचान है। अब तुम्हें विचार करना है कि तुम मूर्ख हो या समझदार?

दस महाश्रावकों
की प्रेरक-जीवन-गाथा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

2- श्रावक कामदेव

प्रियवर! आपका चेहरा आज कुछ अनूठा नजर आ रहा है? आपकी मुस्कान और चमक-दमक अपूर्व प्रतीत हो रही है। व्यापार में विशेष लाभ हुआ है या कोई और बात है? भद्रा के शब्दों में जैसे दुनिया भर की मीठास आकर समा गयी थी।

हाँ, प्रिये! आज का दिन मेरे जीवन का सबसे ज्यादा सुकून का दिन है। यदि यह कहूँ कि सुकून और शान्ति क्या होते हैं, यह भी मैंने आज, अभी ही जाना है तो भी गलत नहीं होगा।

कामदेव के चेहरे पर तैरती प्रसन्नता देखकर भद्रा चकित हुए बिना न रही।

क्या कह रहे हैं आप? ऐसा कौनसा निधान या कुबेर का अखूट खजाना हाथ लग गया है जो आप इतने खुशमिजाज दिखाई दे रहे हैं? भद्रा की आँखों में प्रश्न कम, जिज्ञासा अधिक थी।

क्या कहूँ प्रिये! आज एक रत्नों का व्यापारी अपने नगर में आया है। पहली बार नहीं, बहुत बार आया परन्तु मैं ही उसे जान नहीं पाया।

उपहास की मुद्रा में भद्रा बोली- मुझे तो बहुत पहले ही पता है कि आप मूर्ख शिरोमणि हैं परन्तु चंपानगरी के लोग आपकी गुण-गाथा गाते अघाते नहीं हैं, लगता है, अब आपकी पोल खुलने ही वाली है।

यह सुनकर कामदेव भी थोड़ा हँसी-मजाक के मिजाज में आ गया। ठीक ही कहा तुमने! फिर तुमने मुझसे नाता क्यों जोड़ा! किसी पण्डित-विद्वान् से ही पल्लू बांध लेती।

पर आपकी मूर्खता मुझे हमेशा से प्रिय रही है क्योंकि इसमें जो पवित्रता और सरलता है, वह तीनों लोकों में नहीं मिल सकती।

अच्छा, अब बताईये-आज आपने कितने करोड़ के रत्न खरीदे और कितना लाभ हुआ? भद्रा पुनः वार्तालाप के केन्द्र-बिन्दु पर आती हुई बोली।

कामदेव का उतरा हुआ चेहरा देखकर उसे लगा-कहीं मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा।

दोनों के बीच कुछ समय तक मौन छाया रहा! कामदेव बोला- देवी! मैं महामूल्यवान रत्नों को खरीद नहीं पाया।

क्यों? आप तो पूरी तरह सक्षम और समर्थ है, फिर ऐसा क्यों हुआ?

प्रिये! यदि सक्षम होता तो महंगे मोती अवश्य ही खरीद लेता।

कोई बात नहीं। जो हुआ सो अच्छा हुआ। पर बताईये तो सही, वे रत्न-मणि हैं कहाँ? ललचायी नजरों से भद्रा की आँखें कामदेव पर स्थिर हो गयी।

देवी! वे रतन तुम देख तो सकती हो पर इन आँखों से नहीं।

भद्रा चकित हुए बगैर नहीं रही। आप ये कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हैं? मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा।

देवी! मैं न तो निद्रा और तन्द्रा में हूँ, न बहकाया-छकाया गया हूँ!

वे मोती अन्तर की आँखों से ही निहारे जा सकते हैं। नश्वर चक्षुओं से दिखने वाली चमक-दमक नश्वर ही होती है परन्तु आत्म-नयन से जो रोशनी नजर आती है, वह शाश्वत और ध्रुव होती है।

प्रिये! मैं आज तक धन-साधन से स्वयं के महत्त्व को आंकता आया पर ये सब पुण्य और पाप के अधीन हैं। आत्मा का अधिकार क्षेत्र स्वयं की शान्ति और साधना का है।

सम्मोहिता भद्रा कामदेव के निष्काम मुखमण्डल को निहार रही थी।

देखो भद्रा! छह करोड़ स्वर्ण मुद्राओं की प्राप्ति हो या छह गोकुलों का स्वामित्व, यह सब पुण्योदय से मुझे जन्मत: मिला परन्तु आत्मा की समझ आज ही मिली।

वह कैसे प्रियतम?

प्रिये! प्रभु श्री महावीर जन-जन के मन-आँगन में आत्मश्रद्धा के दीप जलाने इस चंपापुरी में पधारे हैं। वैसे तो नाम से उनको कई बार जाना है, पर उनका निष्काम व्यक्तित्व आज ही पहचान पाया हूँ।

प्रभु की सन्निधि फलरूप मैंने आज श्रावक जीवन के सम्यक्त्व युक्त बारह व्रतों की ऐसी निधि प्राप्त की है जिसकी कींमत धनी अथवा विद्वान् व्यक्ति नहीं, अपितु कोई श्रद्धालु ही कर सकता है। परन्तु इससे महंगे पंचमहाव्रतों के पाँच मणि थे, मैं उन्हें खरीद नहीं पाया।

क्या तुम भी उस निधि इच्छुक हो? यकायक प्रश्न करके अपनी निगाहें कामदेव ने भद्रा पर टिका दी।

भद्रा सौन्दर्यशालिनी ही नहीं, पति की अनुगामिनी भी थी।

जिस दिन से मैंने आपका हाथ थामा है, तब से मैं भद्रा नहीं रही, कामदेव हो गयी हूँ। आपकी चाह ही मेरी राह है।

भद्रा ने सपरिवार समवसरण में प्रभु-शरण स्वीकार कर बारह व्रत ग्रहण किये।

कामदेव का जीवन जैसे साधना से हरा-भरा हो गया। धर्म की ऐसी लौ लगी कि हर पल रोशन हो गया।

अप्रतिम साधना...दिव्य तपोपूत व्यक्तित्व... नि:स्पृह जीवन शैली से वह हर दिशा में छा गया। पहले उसकी कीर्ति धनपरक थी, वह आज धर्मपरक बन गयी थी।

चौदह वर्ष के पश्चात् एक दिन उसने पारिवारिक सदस्यों को बुलाकर कहा- मैं अब श्रावक जीवन के महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान में प्रविष्ट होना चाहता हूँ। एकादश प्रतिमाएँ धारण करके साधना-पथ पर आरोहण करना चाहता हूँ अत: आप मुझे समस्त उत्तरदायित्वों से मुक्त करें।

भद्रा की आँखों में उतर आये प्रश्न को समाहित करते हुए कहा- उदास न हो देवी! मैं जानता हूँ कि तुम भी इस दिव्य-उपासना में साथ-साथ चलना चाहती हो परन्तु इसकी जिनाज्ञा नहीं है।

स्त्री की कोमलता कदाचित् साधना की कठोरता सह न पाये और वह अस्थिर हो जाये तो अशुभ होता है।

भद्रा की आँखें भर आयी।

पुत्र बोला- माँ! यूँ कमजोर न बनो! हमें कम से कम इस बात का गौरव तो मिला ही है कि हम सभी ऐसे व्यक्तित्व से जुड़े हैं।

हम सभी के होंठों पर शुभकामनाओं के फूल सजे हुए थे। संसार का भार पुत्र को सौंपकर मंगल मुहूर्त्त में कामदेव साधना के कण्टकाकीर्ण सोपान पर चल पड़ा।

प्रतिमा-साधना के साथ-साथ कामदेव की आत्म-शक्ति बढ़ती गयी। साधना की सघनता स्वयं को ही नहीं, वातावरण को भी प्रभावित करती है। जिस प्रकार जिनेन्द्र कल्याणक के प्रसंगों पर उनके पूर्वजन्म की साधना की सूक्ष्म तरंगों से इन्द्र का सिंहासन चलायमान हो उठता है, वैसे ही कामदेव की तप-तरंगों ने देवराज तक को प्रभावित कर दिया।

उसकी नि:स्पृह बेजोड़ साधना और चट्टान से फौलादी संकल्प को देख कर देवेन्द्र भी चकित हुए बिना न रहे।

देवसभा के मध्य प्रशंसा करते हुए कहा- ओहो! चंपापुरी की ही नहीं, सम्पूर्ण आर्य क्षेत्र की शान है यह श्रावक शिरोमणि कामदेव! इसके अविचल धैर्य और अडिग मनोबल की जितनी प्रशंसा करें, उतनी कम है। देव भी उसकी होड़ नहीं कर सकते। (क्रमश:)

मस्जिद के नीचे निकला जैन मन्दिर

रायचूर (कर्नाटक) में रोड़ रूंदिकरण का कार्य करने के लिये एक मस्जिद गिराई गई। मस्जिद के नीचे बहुत ही प्राचीन जैन मंदिर निकला। जैन मंदिर निकलते ही जैन समाज के लोगों का मंदिर देखने के लिये हुजुम सा पहुंचने लगा।

संस्मरण

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

खंभात तीर्थ की पावन यात्रा

गुर्जर प्रदेश की पुण्य भूमि। भव्यता और दिव्यता के अमृत से अभिसिंचित जैन तीर्थभूमियाँ। शत्रुंजय, गिरनार, शंखेश्वर जैसे पावन-मनभावन तीर्थ स्थलों के क्रमांक में एक नाम है- स्तंभन पार्श्वनाथ तीर्थ भूमि-खंभात का।

एक तरफ खरतरगच्छ महासम्मेलन के लिये अल्पावधि में लम्बी दूरी तय करनी थी वहीं खंभात के गौरव स्तंभन पार्श्वनाथ प्रभु के दर्शन पाकर नयन-युगल को ही नहीं, परिपूर्ण जीवन को शांति और तृप्ति की रोशनी से भर देने का भक्तिभरा मधुर मनोभाव था।

इस संस्मरणीय तीर्थ-यात्रा के प्रणेता थे पूज्य गुरूदेव श्री। उनके भाव-जगत में एक विचार स्फुरित हुआ कि उस आनंद कुंज में प्रवेश करें जो अपने पूर्वाचार्यों की साधना का क्रीडांगण रहा है, उन महामहिम श्री स्तंभन पार्श्वनाथ की भक्ति-स्तुति करें जिनका चैत्यवंदन-कायोत्सर्ग प्रतिदिन संध्याकालीन प्रतिक्रमण में करते हैं।

विचार ने निर्णय का आकार लिया...निर्णय आचार का आधार बना...आचार के सागर में भक्ति की तरंगें अंगडाई लेने लगी।

पाँव आस्था केन्द्र की दिशा में उठे और श्रद्धा को शतगुणित होने का अवसर मिला। धर्मज से धर्मधाम खंभात की ओर चले। ऐसा लग रहा था जैसे पार्श्वनाथ प्रभु का बुलावा आया है। हम नहीं चल रहे थे, अपितु पुण्य भूमि का आकर्षण हमें अपनी ओर खींच रहा था। अपराह्न के चार बजे भास्कर का ताप अपने पूरे यौवन पर था। उष्ण और ग्रीष्म थे अवनि व अम्बर, पर मुख्य मार्ग पर आते ही जैसे आत्म-प्रदेशों पर अमी बूंदों का छिड़काव हुआ।

मार्ग के दोंनो तरफ हरी-भरी वृक्षावलियाँ इस तरह फैली हुई थी जैसे कल्पतरू और विघ्नहरू बनकर स्तंभन पार्श्वनाथ प्रभु हमारी सारी परेशानियों को हर लेना चाहते थे।

मेरे हृदय में एक स्निग्ध संवेदना उभरी-अरे! सामर्थ्य सम्पन्न मनुष्य तो क्या उपकार करता है, इन वृक्षों के सामने?

ओहो! 'परोपकाराय सतां विभूतयः' की यह उक्ति कितनी सिद्ध-प्रसिद्ध।

अहोः एषा वरं जन्म
सर्वप्राण्युपजीवनम्!
धन्याः महीरुहा येभ्यो
निराशां यान्ति नार्थिनः।।

अहो! सर्वप्राणियों के उपजीवन रूप वृक्षों का जन्म श्रेष्ठ है। जिसने कोई भी अभिलाषी निराशा नहीं पाता, ये वृक्ष धन्य हैं। शाम का विश्राम काणिसा नामक गाँव के विद्यालय में सम्पन्न हुआ। श्रमण-जीवन की आवश्यक-क्रियाएँ करने के पश्चात् संथारा करके जागृत हुए तो जैसे एक नयी ताजगी और स्फूर्ति की अनुभूति से जिन्दगी भर गयी।

अवनितल पर प्रसृत सूर्य की स्वर्णिम किरणों के साथ कदम दर कदम हम खंभात की ओर बढ़ते जा रहे थे। ख्यालों की दुनिया में एक-एक करके इस तीर्थ के ऐतिहासिक पृष्ठ खुलते जा रहे थे।

अरे! कोई तीर्थ दो-तीन-चार नाम से विख्यात है पर

यह तीर्थभूमि तो अतुलनीय है। कितने-कितने नाम हैं इस धाम के। गौरवमय अतीत के गवाक्ष से झांका तो पाया कि त्रम्बावती, भोगावती, लीलावती, कनकावती, रूपवती, अमरावती, खंभावती, खंभनयरी, स्तंभनपुर जैसे अनेक प्राणवान्-अर्थवान् नामों से यह भव्य भूमि जानी-पहचानी और पूजी जाती रही है।

तीर्थभूमि की आबोहवा में पहुँचते ही जैसे रोम-रोम उल्लास से थिरक उठा। वाहनों की यद्यपि मुख्य मार्ग पर विपुलता थी तथापि प्राचीन हवेलियों... सौम्य शिल्प कलाओं और मंदिरों पर लहराती धर्म-ध्वजाओं के द्वारा तीर्थ-भूमि की प्राचीनता, ऐतिहासिकता और भव्यता प्रत्यक्षत: टपक रही थी। जर्रे-जर्रे में जैसे दिव्यता का नव्य-निनाद हो रहा था।

उत्फुलित नयन... प्रफुल्लित हृदय... चमत्कृत चित्त और विस्मित प्राणों में रह-रह कर जैसे आनंद का अंजन हो रहा था।

सर्वप्रथम हमारे नयन-कक्ष के केन्द्र में थे-श्री सुखसागर पार्श्वनाथ भगवान! दर्शन-वंदन करने के लिये हम अन्दर प्रविष्ट हो, उससे पहले हमारी दृष्टि मंदिर की बाह्य दीवार पर स्थित एक बोर्ड पर पडी और एकदम से याद आया कि ये वे ही सुखसागर पार्श्वनाथ हैं जो श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज के श्रद्धा-दीप रहे हैं।

उन्हीं की भक्ति का प्रमाण उस बोर्ड पर अंकित था। ओह! प्रौढ द्रव्यानुयोग द्वारा भक्ति-योग के सोपानों पर ले जाने वाले श्री देवचन्द्रजी म. ने स्वकृत-भक्ति भाव से भृत चौबीसी में श्री पार्श्वनाथ की स्तवना में सुखसागर प्रभु की स्तुति की है-

सहज गुण आगरो स्वामी सुखसागरो
ज्ञान वैराग रो प्रभु सवायो!
शुद्धता एकता तीक्ष्णता भाव थी
मोहरिपु जीती जयपडह वायो।

सहज आत्म गुणों के अथाह कोश-भण्डार-आकर सुखसागर पार्श्व-प्रभु के प्रस्तुत स्तवन में खंभात का भी उल्लेख किया है-

नयर खंभायते पार्श्वप्रभु दरसने
विकसते हर्ष उल्साह वाध्यो।

सुख की झील में नहाते हुए हमारे हृदय में भक्ति के फूल खिल उठे।

तभी याद आया कि यह भूमि 77 जिनालयों से सुशोभित है। उनमें से छह जिनालयों में प्रतिष्ठित पार्श्वनाथ 108 पार्श्वनाथ की सूची में अंकित है।

श्री सुखसागर पार्श्वनाथ।

श्री स्तंभन पार्श्वनाथ।

श्री भुवन पार्श्वनाथ।

श्री सोम चिन्तामणि पार्श्वनाथ।

श्री कंसारी पार्श्वनाथ।

श्री रत्न चिन्तामणि पार्श्वनाथ।

अब तन-मन तो क्या, प्राण भी कहीं ठहरना नहीं चाहते थे। एक चाह...एक राह थी स्तंभन पार्श्वनाथ की। उनके दर्शन-स्पर्शन की मीठी कल्पना हृदय में नृत्य कर रही थी।

खंभात नगर के 'खारवाडो' नामक उपनगर में विराजमान स्तंभन पार्श्वप्रभु! उस देव विमान तुल्य प्रभु-प्रासाद के सम्मुख पहुँचकर जैसे युगों-युगों की भक्ति-भावना फलीभूत हुई।

भूतल से काफी ऊँचा उठा हुआ दिव्य-देवालय! 10-15 सोपान चढकर ज्योंहि हम पार्श्व प्रभु के दृष्टि पथ में आये कि जैसे विचारों की दुनिया स्तंभित हो गयी। तन-मन ही नहीं, भावों कारवां भी थम-सा गया।

हवाएँ... फिजाएँ...प्रकृति, सब हमारे मुखर होने की प्रतीक्षा में थे पर सब कुछ नि:शब्द था। हृदय के मौन-सरोवर में कहीं कोई आहट...हलचल नहीं थी।

सार्थक नाम का सार्थक काम! निष्काम था कामना का संसार।

कृष्णवर्णीय पार्श्वनाथ जैसे अनन्त पुण्य राशि का अखूट पुंज! मात्र आठ इंच ऊँचाई वाले प्रभु पर महासुमेरू से भी महान्! पद्मासन में अवस्थित प्रभु जैसे वीतरागता का अखण्ड धाम!

पाँच फणों से सुशोभित प्रभु जैसे प्रशमरस, शांत रस, सुधारस, संवेगरस और पुण्यरस की वर्षा कर रहे थे। सप्तफणों से संयुत् परिकर जैसे 'सप्तभय' का निवारण कर रहा था।

दिव्य-दीदार, भव्य-आकार और नव्य-दरबार! जैसे जलापूर्ण मेघ छाये और भक्ति भरे मन-मयूर नाच उठे। सूर्य उगा और सूर्यमुखी फूल खिल उठे।

समर्पण के होंठों ने 'नमो जिणाणं' का शब्दोच्चारण किया...देखते देखते स्तंभन पार्श्वनाथ की भक्ति और शक्ति

से ओत प्रोत मधुर इतिहास मानस-धरातल पर झंकृत हो उठा। छोटी सी मूर्ति का अतीत कितना महान्! कितना काल बीता प्रतिमा को निर्मित हुए लाखों वर्षों-युगों से भी पुराना समृद्ध इतिहास भक्ति का जैसे खजाना है।

गत चौबीसी में जब दामोदर भगवान अपनी अमृतमयी देशना द्वारा अध्यात्म का बोध बांट रहे थे, तब उनके शासन का एक आराधक श्रावक था-अषाढी। जब दामोदर प्रभु ने भावी के महाप्रभावी जगत को परत दर परत खोला तो अषाढी श्रावक ने सोचा कि जिस पार्श्वनाथ प्रभु की चरण-डोर थामकर मैं मुक्ति के गगन में उडान नरूंगा, उन आगामी चौबीसी के तैईसवें तीर्थपति के भक्तिसागर में गोते लगाकर मुझे 'रत्न-मणियाँ' पानी हैं।

शुद्ध नीलम-रत्न की एक मनोहर प्रतिमा का निर्माण करवाकर विशुद्ध विचार श्रेणी द्वारा वह नित्य पूजन-अर्चन करने लगा।

श्रद्धा के अनमोल प्रभाव से वह प्रतिमा दिन-ब-दिन शक्ति, साधना और समर्पण का अचिन्त्य कोषागार बनती गयी। प्रस्तर प्रतिमा बना और प्रतिमा परमात्म-तत्त्व का परम-धाम। वर्षों तक अषाढी श्रावक की भक्ति-पूजा-उपासना का क्रम प्रवर्धमान रहा।

तदुपरान्त पुण्य पुंज बनी यह वांछितपूर्णी मूर्ति सौधर्माधिपति की श्रद्धा का केन्द्र बिंदु बनी। उसने निजावास में स्थापित कर प्रभु की स्तवना द्वारा भक्ति-भावों का सिंचन किया। क्रमशः वरूणदेव के बाद नागराज जिनराज की पूजा करने लगा। समुद्रीतट पर उत्तुंग देवयान सदृश महान् जिनालय में स्थापित कर वह पातालवासी देवों के साथ उपासना करता रहा।

काल-चक्र लगातार चक्कर लगा रहा था। क्षण-क्षण का व्यय करता हुआ काल-पुरूष वर्तमान चौबीसी के बीसवें तीर्थपति श्री मुनिसुव्रत स्वामी के काल में पहुँच गया। उस काल से जुड़ा स्तभंन पार्श्वनाथ का प्रकाश इतिहास के रोशनदान से बाहर झांकने लगा। (क्रमशः)

श्री महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव

श्री महावीर जन्म कल्याणक 2615 के उपलक्ष्य में श्री जैन सेवा संघ व श्री सिवांची जैन संघ ग्रेटर हैदराबाद के तत्वावधान में श्री सिवांची जैन युवा संघठन अध्यक्ष उत्तम संकलेचा, उपाध्यक्ष संजय मांडोत, मंत्री इन्दर मेहता, प्रचार विकास देवड़ा धोका के नेतृत्व में जगत गिरीगुट्टा स्थित Care & love (home for orphans and needy children) के बच्चों को दवाईयाँ, बर्तन, कपड़े जैसी कई जरुरत की चीज़े भेट की। सुबह के खाने का आयोजन कर खूब सेवा की ओर बागरेचा बंधु कपिल व मनीष के द्वारा बच्चों में खेल प्रतियोगिता भी करवाई ओर ईनाम दिया। सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी से बच्चों की आसामान्य प्रतिभा का पता चलता है। इस मौके पर अशोक काका, महेन्द्र बाफना, अमृतलाल पालरेचा, रतन चोपड़ा, विनोद हूँडीया, रोनक बागरेचा, प्रथम मेहता का योगदान रहा।

विकास देवड़ा धोका

मेरी अनुभूति

बही आनंद की बहार

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

''शत्रुंजय तीरथ चालो, खरतरगच्छ रो बडो त्यौंहार...बेंड द्वारा सूर्योदय की मंगलवेला में चल रहे इस गीत ने हृदय के तारों को झंकृत कर दिया। शीतलहरों के बीच भी एक अजीब सी ऊष्मा भर गयी। रोम-रोम स्पंदित हो गया। गीत के बोल इतने अच्छे लग रहे थे कि मन चाहता था कि यह गीत, गीत के भाव ऐसे ही चलते रहे। शब्द जैसे कानों में शहद की मीठी चासनी घोल रहे थे।

आज सभी गुरू भगवंतों को उतावल थी। कोई एक पल भी कहीं रूकना नहीं चाहता था। आज सम्मेलन का प्रारंभ था। समिति एवं परिषद् के मुख्य-मुख्य सारे पदाधिकारी आ गये थे। यद्यपि 1 फरवरी से 9 तक साधु-साध्वी सम्मेलन ही था फिर भी सम्मेलन की उत्सुकता के कारण बहुत सारे कार्यकर्ता भी आ गये थे। खरतरगच्छ के वरिष्ठतम् श्रावकवर्य श्री मोहनचंदजी सा ढढ्ढा भी पधार गये थे।

सभी के चेहरें प्रसन्नता से खिले हुए थे। गुरु भगवंतों की विशाल संख्या, उनका गच्छ समर्पण एवं पूज्य गुरुदेव के प्रति उनकी रग-रग में बहता अहोभाव उपस्थित श्रावक संघ को प्रेरणा देने के लिए पर्याप्त था। सम्मेलन के लिये आज सभी को जिन हरि विहार से 9 बजे प्रस्थान करके बाबु माधवलाल धर्मशाला जाना था क्योंकि सम्मेलन वहाँ के हॉल में होना था।

सभी की नजरें घड़ी की सुई पर अटकी हुई थी। घड़ी ने ज्योंहि नौ के टकोरे बजाये, पूज्य गुरूदेव श्री धीर गंभीर चाल से अपना शिष्य मंडली सहित परमात्मा का गुरुदेव का एवं पूज्य गणनायकजी का स्मरण करके, हरि विहार के मुख्य द्वार पर पधार गये।

आज उनके चेहरे पर जितनी गंभीरता थी, उतना ही जिम्मेदारी से ओतप्रोत वात्सल्य था। आँखों की चमक उन्हें एकटक निहारने के लिये मजबूर कर रही थी तो होठों की मंद-मंद मुस्कान एक अनूठा जादू बिखेर रही थी। क्रमशः प्रमुख-प्रमुख श्रावकगण भी उनके निकट आ गये। आज विशाल पंक्तिबद्ध एवं अनुशासित साध्वी मंडल तो जैसे एक अलग ही छटा बिखेर रहा था। श्राविकाएं अल्पसंख्या में ही थी।

बेंड की मीठी धुन पर थिरकते उम्रदराज पर सम्मेलन की रीड़ की हड्डी श्री विजयराजजी डोसी अन्य भी सभी को नाचने के लिये खींच रहे थे। वे एवं श्री बाबुलालजी लुणिया तो 12 फरवरी से यही थे और उससे पूर्व भी कितनी ही बार सम्मेलन की तैयारी का जायजा लेने आ गये थे।

उन पर दोहरी जिम्मेदारी थी। हरि विहार के अध्यक्ष एवं महामंत्री के रूप में उन्हें अपनी संस्था में पधारे चतुर्विध संघ का स्वागत करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हो रहा था।

यह भी एक संयोग ही है कि इन वर्षो में जब से संघवी श्री विजयराजजी डोसी एवं श्री बाबुलालजी लुणिया, अध्यक्ष व महामंत्री बने हैं तब से पालीताणा हमारा आना जाना निरंतर रहा है। विजयराजजी यद्यपि बेंगलौर रहते हैं फिर भी उनकी उपस्थिति बराबर बनी रहती है और बाबुलालजी की उपस्थिति के बारे में तो सारे शब्द बौने हो जाते हैं। उनके लिये क्षेत्र की निकटता उनके भावों की अभिव्यक्ति में और अधिक सहयोगी बन गयी हैं। वे अहमदाबाद रहते हैं अतः जब भी आवश्यकता हुई कि तुरन्त पहुँच जाते हैं।

गीत पर नाचता झूमता यह श्रावक संघ का काफिला बाबु माधवलाल धर्मशाला पहुँचा तो वहाँ की सजावट उसकी कलात्मकता ने मन को मुग्ध कर लिया। एक श्राविका मंगल कलश लेकर सम्मेलन हेतु शुभभावनाओं से बधा रही थी तो दूसरी ओर विभिन्न प्रकार के सूखे मेवे से बनी गहुँलिया स्वागत कर रही थी। रंगोली में उकेरी गयी विभिन्न आकृतियाँ उन्हें देखने के लिये रोक रही थी पर पीछे आ रहा साध्वी मंडल का सैलाब पल भर भी रूकनें

नहीं दे रहा था।

शासनरत्न श्रमणोपासक शांतिलालजी गुलेच्छा चैन्नै अपनी धर्मपत्नी परम् धर्मनिष्ठा सौ. मंजुदेवी के साथ खड़े चतुर्विध संघ का परम आनंद के साथ स्वागत कर रहे थे। परम पूजनीया संघरत्ना शशिप्रभा श्रीजी म.सा. शिष्या मंडली के साथ हॉल के बाहर प्रसन्नता के लिये स्वागत कर रहे थे। स्मरण रहे माधुलाल धर्मशाला एवं मंदिर का जीर्णोद्धार उन्हीं की पावन प्रेरणा से हुआ था।

आज अपनी प्रेरणा से निर्मित धर्मशाला में सम्मेलन हेतु गुरु भगवंतों को पाकर उनकी आंतरिक प्रसन्नता छलक रही थी।

पू. गुरूदेव श्री एवं श्रावकगण अलग सीढ़ी से एवं हम साध्वी मंडल अलग सीढी से, प्रथम तल पर बने हॉल में पहुँचे। पू. गुरुदेव श्री द्वारा आसन ग्रहण के पश्चात् सकल संघ ने वंदना करके मंगलाचरण का निवेदन किया।

मंगलाचरण के पश्चात् सर्वप्रथम खडे हुए पू. मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म. उन्होंने सविनय वंदना के पश्चात् कहा- सम्मेलन का सबसे पहला मुद्दा है- पदो का निर्णय। मैं समस्त सुखसागर श्रमण मंडल की ओर से निवेदन करता हूँ कि आप श्री आचार्य पद ग्रहण करके संघ को सनाथ करें। उन्हीं के स्वर मे स्वर मिलाया पू. मुनि श्री मणिरत्नसागरजी म. ने श्रमणी मंडल की ओर से प.पू. दिव्यप्रभा श्री जी म.सा. के आदेश से प.पू. आदरणीया शशिप्रभा श्री जी म.सा. ने अपनी तेजस्वी शैली में कहा- हमारा समस्त साध्वी मंडल बिना किसी भूमिका के आप श्री से आचार्य पद की स्वीकृति चाहता है। जिस मर्यादा को आपने जीया है, हम चाहते है आप मर्यादा पुरूष बनकर संघ को सक्षम नेतृत्व प्रदान करें।

यद्यपि श्री संघ की ओर से सूरत में विनंती हो चूकी थी फिर भी श्रावक संघ की ओर से पुनः निवेदन दोहराया श्रावकवर्य श्री मोहनचंदजी ढढ्ढा ने। उन्होंने कहा- गणनायक श्री सुखसागरजी म. की परम्परा अति गौरवशाली रही हैं। इस परम्परा को और अधिक उज्ज्वल एवं यशस्वी बनाने के लिये आप श्री आचार्य पद की स्वीकृति प्रदान करें। चतुर्विध संघ अब आप श्री से स्वीकृति की अपेक्षा रखता है

सम्मेलन समिति के अध्यक्ष संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा आज अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किये बिना कैसे रहते। उनके चेहरे की प्रसन्नता अद्‌भुत थी। उन्होंने कहा-संपूर्ण भारत का खरतरगच्छ संघ ही नहीं अपितु अन्य गच्छ का व्यक्ति भी उत्सुकता से आज की गतिविधियों पर टकटकी लगाया हुआ है। संघ ने इन वर्षो में बहुत उतार चढाव देखे हैं।

अब हम आपके नेतृत्व में गच्छ की गरिमा को और अधिक ऊँचाईयों पर से जाना चाहते हैं। जिस गच्छ की स्थापना और फिर उसके विस्तार में अनेक संत महापुरूषों ने अपना भव्य योगदान प्रदान किया है। उसी संघ के शास्ता पुरूष बनकर आप हम सभी की भावना साकार करें।

समिति के संयोजक संघवी श्री विजयराजजी डोसी ने कहा-हमने आपकी आज्ञा सदैव मानी हैं। आज यह चतुर्विध संघ आपसे अधिकारपूर्वक प्रार्थना करता है कि आप श्री हमें स्वीकृति प्रदान कर निश्चिंत करें।

गुरुदेव के चेहरे पर आज मात्र और मात्र वात्सल्य था। उनकी आँखें प्रेम छलका रही थी। वे अपना कर्तव्य मात्र कर्तव्य के रूप में नही अपितु उसमें प्रेम का रस घोलकर अदाकर रहे थे।

उन्होंने प्रत्युत्तर देने से पूर्व चारों ओर निगाहें घुमाकर चतुर्विध संघ की आँखों में छलकती श्रद्धा को देखा और फिर गला साफ करके कहा- मैंने जीवन में सदैव व्यक्तिगत व्यवस्था की अपेक्षा संघीय आवश्यकता और परम्परा को महत्व दिया है मेरे लिये वर्षो पूर्व आचार्य पद की चर्चा हुई थी। परन्तु मैंने सदैव परम्परा का सम्मान करते हुए सामूहिक दायित्व बोध की आवश्यकता पर बल दिया है। अगर किसी निर्णय में सामूहिक स्वीकृति हो तो ही वह निर्णय क्रियान्विति की ओर अग्रसर होता है। सम्मेलन का यही लक्ष्य है। हम यहाँ परस्पर मिल बैठकर गच्छविकास और शासन विकास का चिंतन करेंगे। सभी की परस्पर जिम्मेदारी भी तय करेंगे। मैंने आचार्य पद अस्वीकार कभी नहीं किया। यही कहा-जब वक्त आयेगा तब यह भी होगा। क्योंकि इंकार का अर्थ पलायन है। परन्तु वक्त से पूर्व नहीं होगा। मैं आचार्य पद की स्वीकृति से पूर्व आप सभी से यह वादा भी चाहता हूँ कि

वक्त पर आप आचार्यपद का गौरव रखते हुए अनुशासन स्वीकार करेंगे।

सभी समवेत स्वर में बोल पड़े- आपकी प्रत्येक आज्ञा को स्वीकार करके हम गौरव का अनुभव करेंगे। तुरन्त मुझे ''माघ'' की उक्ति याद आ गयी- ''आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया''। गुरु की प्रत्येक आज्ञा बिना विचार किये स्वीकृति योग्य हैं।

अपने इष्ट का स्मरण कर गुरुदेव ने गंभीरता कहा- आप सभी की भावना को मैं अपने माथे चढाता हुआ आचार्य पद ग्रहण करने की स्वीकृति प्रदान करता हूँ। सुनते ही पूरा हॉल तालियों की गड़गडाहट एवं जयनाद से गुंज उठा। सभी के चेहरे खिल उठे! आनंद की बयार बह उठे। मैं देख रही थी- यद्यपि गुरुदेव ने जेठ वैशाख की गर्मी सही है फिर भी गर्मी मात्र दो माह सहन की हैं पर श्रद्धा का सावन, आस्था की ठंडक और प्रेम का बसंत कई गुणा पाया है। घटनाओं ने बीते समय घाव खूब दिये थे पर वरिष्ठतम गुरु भगवंतों का एवं समाज का जो सम्मान भरा प्रेम आप श्री को प्राप्त हुआ है, निसंदेह यह आपकी तपस्या का श्रेष्ठतम मूल्यांकन है।

पल भर में यह शुभ समाचार संचार माध्यमों से संपूर्ण भारत में फैल गया। होली से पूर्व ही चारों ओर खुशियों का गुलाल बिखर गया। अनिश्चितता की अंधेरी रात बीत गयी। खुशियों का उजाला चिहुँ ओर फैल गया।

(क्रमशः)

अनुभव गीतिका

तर्ज : कभी राम बनके

सुलोचना चरणरज प्रियकल्पनाश्री

गुरुदेव मेरे, कोहीनूर मेरे
मेरे गुरुवर का मोल अमोला ।।टेर।।
गुरुवर ने सभी को बुलाया, सम्मेलन का ठाठ लगाया।
दौडे दौडे आये, पालिताना आये, गिरिराज के दर्शन पाये।।
गुरु दर्शन कर हर्षाये ।।1।।
खरतरगच्छ के बने सिरताज, मणिप्रभ गुरु महाराज।
सूरि राज बनके, संघ ताज बनके, योगोद्वहन का नाद गुंजाया।।2।।
नौ दिन में नियम बने भारी, योगोद्वहन की करली तैयारी।
मन में हर्ष भरके, तन में हर्ष धरके, मंगल मुहूर्त्त में प्रवेश कराया।।3।।
क्रिया करने सभी दौड़े आते, पाटा बेलन भी साथ में लाते।
कभी नाक रगड़े, कभी हाथ रगड़े, रगडे रगड़े कर्मों को रगड़े।।4।।
संगीतमय क्रिया कराते, मनित म.सा. सबको हंसाते।
दांडीधर बनके, कालग्रहण करके, सहयोगी बने मुनिराज।।5।।
रत्नाधिक बने ये तपस्वी, तप करके बने ये यशस्वी।
सबका पुण्य खिला, अधिकार मिला, आगम पढके बनेंगे ज्ञाता।।6।।
व्यवहार हुआ हो कछकम्, हाथ जोड़ के मिच्छामी दुक्कड्म।
हमें माफ करना, सर पे हाथ रखना, साता पूछो सुलोचना मंडल।।7।।
साध्वी मंडल पे कृपा बरसाना, सम्मेलन में जल्दी बुलाना।
आचारांग का योग राना ।।8।।

समाचार दर्शन

पालीताना में वांचना

श्री सिद्धाचल महातीर्थ की पावन भूमि पर श्री जिनहरिविहार धर्मशाला में साधु साध्वीजी भगवंतों में वाचना का कार्यक्रम निरन्तर चल रहा है।

पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. महोपाध्याय समय सुन्दरजी म. द्वारा रचित समाचारी शतक पर तथा पूजनीया महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. पाक्षिक सूत्र पर वाचना फरमाते हैं। वाचना में सभी साधु साध्वीजी भगवंत पधारते हैं।

गौशाला में योगदान

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर के तत्वावधान में निर्मित होने जा रही श्री रतनमाला गौशाला के लिये विशाल भूखण्ड क्रय करने हेतु श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, भिवंडी की ओर से ग्यारह लाख रूपये की राशि अर्पण करने की घोषणा की गई। यह घोषणा संघ के अधयक्ष श्री पारसमलजी बोहरा हाला वालों ने पालीताना तीर्थ भूमि पर सम्मेलन के अवसर पर की। जहाज मंदिर की ओर से भिवण्डी खरतरगच्छ संघ का आभार ज्ञापित किया गया।

सारंगखेड़ा में 8वीं वर्षगांठ

नंदुरबार जिले के सारंगखेडा में कुंथुनाथ जिन मंदिर की 8वीं वर्षगंठ अत्यन्त उल्लास के साथ 15 अप्रेल 2016 को मनाई गई। इस मंदिर की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. (तत्कालीन उपाध्याय) की पावन निश्रा में संपन्न हुई थी। इस वर्ष ध्वजा का लाभ अंकलेश्वर निवासी शा. अभयकुमारजी दिनेशकुमारजी गुगलिया परिवार ने लिया। लाभार्थी परिवार का श्रीसंघ द्वारा बहुमान किया गया। स्वामिवात्सल्य का आयोजन श्रीसंघ द्वारा किया गया।

– मुकेश लोढ़ा, अध्यक्ष

श्री नाकोड़ाजी तीर्थ भूमि पर कब्जा

विश्वविख्यात जैन श्वे. तीर्थ भूमि श्री नाकोडाजी की परम पावन भूमि पर कुछ असामाजिक तत्त्वों द्वारा तीर्थ की भूमि पर जबरत कब्जा किया जा कर दीवारें बनाई जा रही है। जबकि वह तीर्थ की भूमि है।

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि इस कब्जे के पीछे किन्हीं राजनैतिक वर्चसव वाले लोगों का हाथ है, जिनकी शह के कारण पुलिस कार्यालय भी मुस्तैदी से इस अवैध कब्जे को रोकने में शिथिलता बरत रहा है।

तीर्थ अध्यक्ष अमृतलालजी छाजेड़ वकील ने कहा है कि इस विषय में संपूर्ण जैन समाज को एकता के साथ विरोध प्रकट करना है ताकि तीर्थ-सुरक्षा हो सके।

''एक भक्तिभाव वर्धमान के २७ भवों के नाम''

अति सुन्दर सुमधुर स्वर संगीतमय भक्ति संध्या रात्रि में श्री जिनदत्त कुशलसुरीश्वरजी दादावाड़ी, अयन्नावरम चैन्नई में आयोजित हुई। जिसमें विश्व प्रसिद्ध संगीतकार मनोजभाई (दो भाई) नाम से जाने जाते है जोड़ी ने भगवान महावीर स्वामीजी के 27भवों की सुन्दर व्याख्या अपने संगीतमय सुरों में पिरोकर प्रस्तुत की। जिसमें हजारों की संख्या में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने नृत्यभाव से वर्धमान का जन्ममहोत्सव मनाया।

उपाश्रय हेतु भांयदर में फ्लेट खरीदा

पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा एवं निश्रा से श्री शंखेश्वर पार्श्वजिनदत्तसूरी खरतरगच्छ ट्रस्ट भायंदर ने अपने स्वयं के द्रव्य से एक फ्लेट लगभग 500 स्कवेयर फीट का उपाश्रय के लिए खरीद।

पू. मनोज्ञसागरजी म.सा. उग्र विहार कर भिवंडी पधारे

प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती ''ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक'' वसीमालानी रत्न शिरोमणि ''छाजेड़ गोत्रीय उद्धारक'' प.पू. गुरुदेव उपाध्याय भगवन्त श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. आदि ठाणा का दिनांक 12.4.2016 बुधवार को सुबह 8.00 बजे श्री शत्रुंजयधाम जैन मंदिर से महिला मंडल की बहनों द्वारा भव्य सामैया से स्वागत किया गया। ऐतिहासिक गृह प्रवेश शोभा यात्रा शत्रुंजयधाम से आरम्भ होकर आगरा रोड़, अंजुराफांटा होती हुई महावीर रेजीडेनसी पहुंची जहां शोभा यात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। रास्ते में जगह जगह पर युवाओं के हुजूम नाच गाने कर गुरुदेव के प्रति अपनी आस्था प्रकट कर रहे थे। महावीर रेजीडेन्सी पहुंचने के बाद गुरुदेव का मांगलिक प्रवचन हुआ। गुरुदेव उपाध्याय बनने के बाद ''पॉवरलूम नगरी'' भिवंडी में पहली बार पधारे है। इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ भिवंडी के अध्यक्ष पारसमलजी बोहरा हालावाला, श्री अचलगच्छ जैन श्रीसंघ भिवंडी के अध्यक्ष श्री रतनलालजी वडेरा, श्री समस्त जैन महासंघ भिवंडी के अध्यक्ष तिलोकजी जैन, उपाध्यक्ष आनंदजी खंतग एवं कार्यकारिणी सदस्य सुरेन्द्रजी चौपड़ा, समाजसेवी बिल्डर तातेड़ सूरत से पधारे युवा पत्रकार चम्पालाल छाजेड़ एवं गुरुदेव भक्त सहित समाज के गणमान्य नागरिक और सकल संघो के सदस्य आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का मंच संचालन आनंद खतग ने किया और अंत में लालण परिवार ने सभी का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर लालण परिवार द्वारा पूज्य उपाध्यायश्री जी को एवं वहां विराजित साध्वीजी को काम्बली ओढ़ाई गई। गुरुदेव श्री अपने परम भक्त लालण परिवार के गृह प्रवेश निम्मित श्री सिद्धचक्र महापूजन के आयोजन हेतु पालिताना से 650 किलामीटर का उग्र विहार कर भिवंडी पधारे है।

पू. उपाध्याय मनोज्ञसागरजी म.सा. ६ मई को सूरत पधारेंगे

पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. आदि ठाणा 2 दिनांक 28 अप्रेल को नवसारी के पास मुम्बई हाईवे पर चिखली शहर पहुचे, जहाँ रामसर जिला बाड़मेर वाले श्री भूरचन्दजी चम्पालालजी गौतमचनदजी बोहरा परिवार की भावभरी विनंती से 29 अप्रेल को नूतन गृह प्रवेश पर ''श्री सिद्धचक्र महापूजन'' आयोजन किया गया। उसके बाद पूज्यश्री गणदेवा-चौहटन निवासी श्री रामलालजी बोहरा परिवार के यहाँ पधारें। फिर 2 मई को पू. उपाध्यायश्री नवसारी नगर पधारे। पू. उपाध्यायश्री की निश्रा में सुरत के मोर्डन टाउन के पास ''दर्शन सोसायटी'' में निर्माणाधीन जिनालय में एक लघु चल प्रतिष्ठा हेतु 6 मई को सूरत पधारेंगे। चल प्रतिष्ठा 9 मई 2016 को सम्पन्न होगी।

समाचार संकलन : चम्पालाल छाजेड़, सूरत

श्री जिन हरि विहार ट्रस्ट मंडल 2016-2019

पालीताणा स्थित श्री जिन हरि विहार ट्रस्ट के चुनाव पूज्य गुरूदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न हुए। संघवी श्री विजयराजजी डोसी बैंगलोर को पुनः तीन वर्षों के लिये अध्यक्ष चुना गया। कार्यकारिणी का इस प्रकार गठन किया गया-

संघवी श्री विजयराजजी डोसी बैंगलोर, अध्यक्ष
श्री वीरेन्द्रमलजी मेहता चेन्नई, उपाध्यक्ष
संघवी अशोककुमारजी भंसाली,अहमदाबाद, उपाध्यक्ष
श्री बाबुलालजी लूणिया, अहमदाबाद, महामंत्री
श्री बाबुलालजी लालन, सिद्धपुर, मंत्री
श्री लक्ष्मीकांत पी. शाह भुज, मंत्री
श्री पुखराजजी तातेड अहमदाबाद, कोषाध्यक्ष
संघवी श्री भंवरलालजी मंडोवरा अहमदाबाद, सह कोषाध्यक्ष
श्री मोतीलालजी झाबक, रायपुर
श्री घेवरचंदजी तातेड, अहमदाबाद
श्री उत्तमचंदजी रांका, चेन्नई
श्री मोतीचंदजी गुलेच्छा, कुनूर
श्रीमती पुष्पाजी ए. जैन, मुंबई
श्री रतनलालजी बोहरा हाला वाले, अहमदाबाद
संघवी कुशलराजजी गुलेच्छा, बैंगलोर
श्री माणकचंदजी ललवानी, अहमदाबाद
श्री जगदीशजी रांका, अहमदाबाद
संघवी श्री बाबुलालजी मरडिया, मुंबई
श्री जसराजजी छाजेड, इचलकरंजी
श्री खीमराजजी बोहरा, जोधपुर
श्री सुरेशजी कांकरिया, रायपुर
श्री बाबुलालजी छाजेड, मुंबई
श्री पदमजी टाटिया, चेन्नई
श्री प्रमोदकुमारजी चोपडा, रायपुर
श्री बाबुलालजी बोथरा, अहमदाबाद
श्री प्रकाशजी सुराणा, रायपुर
श्री संतोषजी गुलेच्छा, रायपुर
श्री विजयजी गुलेच्छा, धमतरी
श्री ज्ञानचंदजी कोठारी, दुर्ग
श्री रतनलालजी बोथरा, अहमदाबाद
श्री विजयमलजी लोढा, कोलकाता
श्री सुनीलजी चौरडिया, कोलकाता
श्री गौतमजी कोठारी, नागोर
श्री भरतकुमार पालरेचा, बैंगलोर

पूज्यश्री का विहार कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 6 ने पालीताना से विहार ता. 25 अप्रेल को विहार किया है। वे वल्लभीपुर, बोरसद होते हुए ता. 12 मई को सूरत पधारेगें।

ता. 13 मई को उनकी पावन निश्रा में श्री अखिल भारतीय जैन श्वे. खरतरगच्छ प्रतिनिधि सभा की एडहॉक कमेटी की मीटींग होगी, साथ ही जिनदत्त कुशल सूरि खरतरगच्छ पेढ़ी की मीटींग भी होगी। उसी दिन जैसलमेर म्यूझियम निर्माण समिति की बैठक भी पूज्य श्री की निश्रा में होगी।

सूरत में पाल उपनगर में कुशल वाटिका में निर्माणाधीन जिन मंदिर एवं दादावाड़ी में बिराजमान होने वाली प्रतिमाओं के भराने के चढ़ावे भी आपश्री की पावन निश्रा में बोले जायेगें। वहाँ से विहार कर खानदेश होते हुए नागपुर की ओर विहार करेंगे। चातुर्मास हेतु दुर्ग नगर में प्रवेश 10 जुलाई 2016 रविवार को होगा।

संपर्क : पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
फोन- मुकेश-98251 05823, 9784326130, mail- jahajmandir99@gmail.com

साधु साध्वी समाचार

पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मननप्रभसागरजी म. ठाणा 7 पालीताना हरि विहार में बिराज रहे हैं। पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. एवं पू. मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. अक्षय तृतीया के पश्चात् राजस्थान की ओर विहार करेंगे।

पू. कुशल मुनि म. ठाणा 4 अहमदाबाद में बिराज रहे हैं। वे आगमों के योगो द्वहन कर रहे हैं।

पूज्य गणीवर श्री मणिरत्नसागरजी म. पालीताना से विहार कर अहमदाबाद होते हुए जयपुर पधार गये हैं। यहॉ कुछ समय की स्थिरता रहेगी।

पू. जीवदया प्रेमी मुनि श्री मैत्रीप्रभसागरजी म. पालीताना से विहार कर अहमदाबाद पधारे हैं। वहाँ से राजस्थान होते हुए उत्तर प्रदेश की ओर विहार करेंगे।

पूज्य मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. दंत चिकित्सा हेतु अहमदाबाद पधारे हैं। लगभग महिने भर की स्थिरता के पश्चात् पालीताना पधारेंगे।

पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 पालीताना जिनहरि विहार में बिराजमान है।

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभा श्रीजी म. आदि ठाणा 7 ने पालीताना से ता. 25 अप्रेल को अहमदाबाद की ओर विहार किया है। वहॉ से वे शंखेश्वर, भीनमाल होते पधारेंगे।

पूजनीया गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा 11 ने पालीताना से इचलकरंजी की ओर ता. 25 अप्रेल को विहार किया है। वे बडौदा से खान्देश की ओर विहार करेंगे। वहॉ से विहार कर चातुर्मास हेतु इचलकरंजी पधारेंगे। पू. साध्वी तपोमूर्ति श्री सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा भी उनके साथ खान्देश होते हुए सोलापुर की ओर विहार करेंगे। वहॉ से चातुर्मास हेतु पार्श्वमणि तीर्थ पेद्दतुम्बलम् पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 20 पालीताना जिन हरि विहार में बिराजमान हैं। अक्षय तृतीया के पश्चात् विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. तत्वदर्शनाश्रीजी म. सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना बाबु माधोलाल धर्मशाला में बिराज रहे हैं। पू. सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 अक्षय तृतीया के पश्चात् चातुर्मास हेतु सूरत की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 11 ने पालीताना से ता. 23 अप्रेल को विहार किया है। वे बडौदा, सूरत होते हुए दुर्ग की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना हरि विहार में बिराज रहे हैं। अक्षय तृतीया के पश्चात् राजस्थान की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा ने पालीताना से 27 अप्रेल को अहमदाबाद की ओर विहार किया है। वे वहॉ चिकित्सा हेतु कुछ समय की स्थिरता के पश्चात् शंखेश्वर की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा पाटण बिराज रहे हैं। वहॉ साध्वी श्री संवेगप्रज्ञाश्रीजी म. श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी म. के व्याकरण व न्याय का अध्ययन चल रहा है।

पू. साध्वी डॉ. श्री लक्ष्यपूर्णा श्रीजी म. ठाणा 5 पालीताना से विहार कर राजस्थान पधारे हैं। अक्षय तृतीया पर फालना बिराजेंगे। तत्पश्चात् दिल्ली की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री प्रियस्मिता श्रीजी म. ठाणा पालीताना से विहार कर अहमदाबाद होते हुए केशरियाजी पधारे हैं, वहाँ पू. साध्वी श्री प्रियचैत्यांजना श्रीजी म. के वर्षीतप का पारणा अक्षय तृतीया 9 मई को होगा। साथ ही तपस्वियों का सामूहिक पारणा होगा। यह समारोह गज मंदिर में होगा।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 17 पालीताना हरि विहार में बिराज रहे हैं। अक्षय तृतीया के पश्चात् चातुर्मास स्थलों की ओर विहार होगा।

पूजनीया साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 शंखेश्वर से विहार कर पाटण, भीनमाल, सिणधरी होते हुए ता. 27 अप्रेल को बाडमेर पधारे हैं। उनके वर्षीतप का पारणा अक्षय तृतीया को कुशल वाटिका में होगा। वहॉ से वे जैसलमेर की ओर विहार करेंगे। जहॉ उनकी निश्रा में अमरसागर पोल पर स्थित जीर्णोद्धार–कृत दादावाडी की पुनः प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योति श्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 3 ने पालीताना से ता. 24 अप्रेल को विहार किया है। वे बडौदा, राजपीपला, खापर, शहादा होते हुए हैदराबाद की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 3 ने पालीताना से ता. 25 अप्रेल को विहार किया है। वे घोघा, भावनगर, धोलका होते हुए इन्दौर की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री शुद्धांजना श्रीजी म. ठाणा6 पालीताना योग्ये द्वहन के पश्चात् विहार कर नवसारी पधारे, वहाँ से कल्याण, पूना होते हुए बैंगलोर की ओर विहार कर रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 पालीताना हरि विहार में बिराज रहे हैं। वे वहॉ से अक्षय तृतीया के बाद बडौदा, राजपीपला होते हुए खान्देश पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री स्वर्णोदयाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 पालीताना हरि विहार में बिराज रहे हैं। अक्षय तृतीया के बाद नवसारी की ओर विहार होगा।

तत्त्व परिक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 118

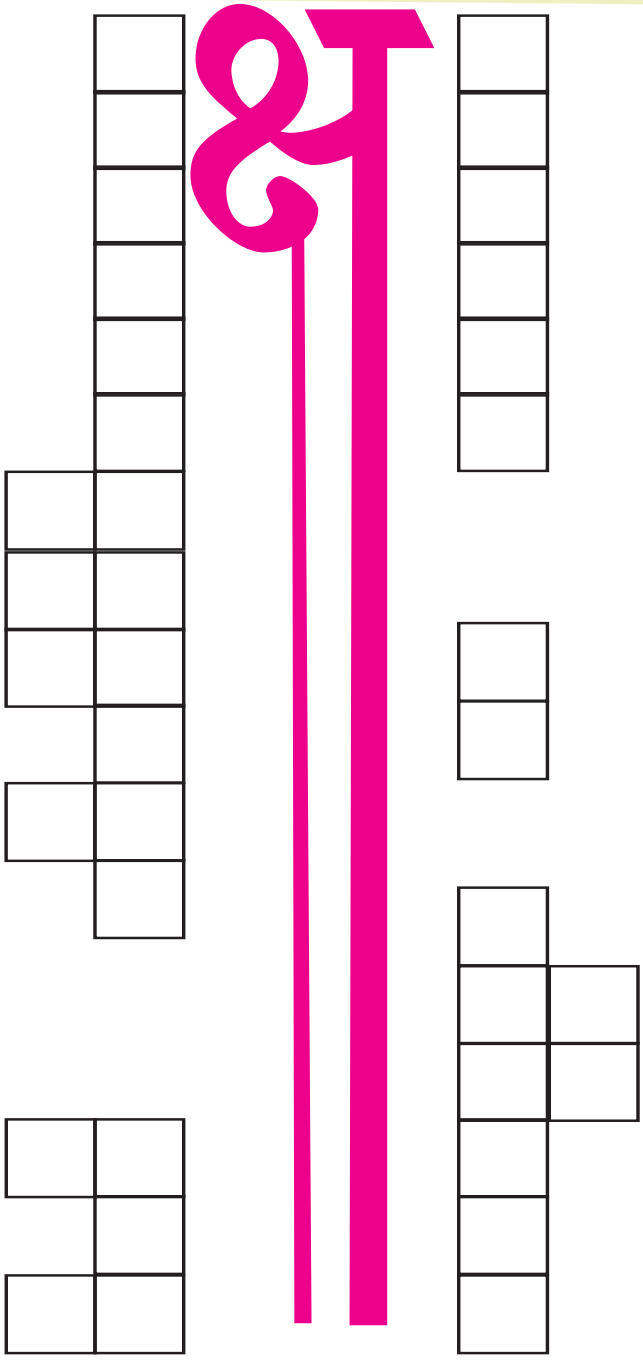

अष्ट प्रकारी पूजा में से एक

आयु कर्म के पूर्ण क्षय से प्राप्त स्थिति

सम्यक्त्व के पाँच होते हैं

रक्षा करने वाला

श्रुतज्ञान का एक भेद्

सर्प की एक जाति

केवल ज्ञान-इन्द्रिय.....

झरोखे का पर्यायवाची

बुद्धिमान

पढा-लिखा

विरोधी पार्टी

देवद्रव्य का..... नहीं करना।

केवल ज्ञान इस श्रेणी में होता है।

सारे पदार्थ..... हैं।

हम आत्मा का करे.....

सामर्थ्य वाला

परीक्षण करने वाला

प्रस्तुत पहेली में हर प्रश्न के उत्तर में 'क्ष' अक्षर है। वह दिया गया है। शेष अक्षरों को रिक्त खानों में समुचित रूप से भरिये।

जहाज मन्दिर पहेली का उत्तर पोस्ट कार्ड पर लिखकर भेजे।

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा : श्री सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन
मुम्बई-400004 (महा.) मो. 98693 48764

नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 जून तक पहुँचना जरुरी है।
2. विजेताओं के नाम व सही हल जुलाई में प्रकाशित किये जायेंगे।
3. प्रथम विजेता को 200 रू. का और 100-100 रु. के चार तथा 50-50 रुपये के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. ग्यारह विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
7. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-
श्री धनराजजी-सुनीतादेवी, उज्ज्वल, गीतांजली, प्रांजल कोचर
तलोदा (फलोदी)

जहाज मंदिर पहेली - 116 का सही उत्तर

1. मणिधारी दादा जिनचन्द्रसूरि जी
2. कोणिक
3. द्रौपदी
4. भगवान महावीर स्वामी
5. मयणासुंदरी
6. बाहुबली
7. सोमिल ब्राह्मण
8. रथनेमि
9. वर्धमान (महावीर स्वामी)
10. ब्राह्मी-सुन्दरी
11. जिनकवीन्द्रसागरसूरि
12. जिनेश्वरसूरिजी
13. उपाध्याय देवन्द्रजी
14. स्थूलिभद्र जी
15. युगबाहु
16. राजा विक्रमादित्य
17. सुकुमालिका
18. सुल्तान मुहम्मद तुगलक
19. शय्यंभवसूरि जी
20. रामचन्द्रसूरिजी

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- मनोहरलाल झाबक, कोटाफीणी बेन बाफना, कोटुर

चार पुरस्कार - नीतू गोलेछा-धमतरी, राजेश जैन-दोंडाइचा, सरला गोलछा-लालबर्रा, ममता गुलेच्छा-दोंडाइचा,

छह पुरस्कार - मानाबाई चतुरमुथा-खरियार रोड़, फीणी बेन बाफना-कोट्टूर, मिनाक्षी संकलेचा-अक्कलकुवा, सीमा छाजेड़-उज्जैन, निर्मला दुग्गड-कोंडागाँव

इनके उत्तर पत्रक सही थे- बसंतीबाई तालेडा, संतोष भण्डारी-कोटा, चन्दनबाला चण्डालिया-कोटा, निर्मला दुग्गड-कोण्डागाँव, राजकुमारी भण्डारी-बूंदी, किरण मेहता-भायन्दर।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर बाजार में था। उसकी पत्नी साथ थी। पत्नी की फरमाईशों से थोडा तंग हो गया था। उसे अपनी आय और पूंजी के बारे में बोध था। वह व्यर्थ में धनराशि व्यय करने के पक्ष में नहीं था। पर उसकी पत्नी के मन में वैभवी शैली से जीने का भाव था।

आज ही वह पडौस में गई थी। उसके बंगले के बाहर खडी .... कार को देखकर ईर्ष्या से भर गई थी। पडौसन ने उसे कहा था- 5 लाख रूपये की यह गाडी है। कल ही खरीदी थी। और आज डिलीवरी आ गई। बहुत ही अच्छी गाडी है।

पडौसन के वाक्य उसके कानों में तीर की तरह चुभे थे। उसने कल्पना की थी कि यह जानबूझ कर मेरे सामने कार की बात कर रही है। वह यह कहना चाह रही है कि मेरे पास नई गाडी है, तेरे पास तो वही पुरानी खटारा जीप है।

शाम के समय जब जटाशंकर घर लौटा था तो उसकी पत्नी की आँखों ने चार आंसू बरसाये थे। वह परेशान हो उठा था। पूछने पर बताया था कि मुझे वैसी ही या उससे बढ़िया कार चाहिये।

जटाशंकर स्थिति भांप गया। उसने कहा- कार तो अपने पास है ही। तुम कहो तो मैं तुम्हें कार से भी महंगा बढ़िया हीरों का नेकलेस दे देता हूँ। नेकलेस की बात सुन कर वह प्रसन्नता से भर उठी। नेकलेस धारण करने की वर्षों की ख्वाहिश पूरी करने का समय आ गया था।

उसने कहा- हाँ! नेकलेस ही ठीक रहेगा। मन में सोचा- उसे पहन कर पडौस ही नहीं, गली के सब घरों में घूम आऊँगी और रौब के साथ नेकलेस दिखाऊँगी।

दूसरे ही दिन जटाशंकर नेकलेस खरीद लाया... पत्नी को सौंप दिया। नेकलेस की डिझाईन देख कर पत्नी अत्यन्त प्रसन्न हो उठी। उसकी आँखों में पति के प्रति अपार सम्मान के भाव तैर उठे।

महिने भर बाद एक दिन जटाशंकर को उसकी पत्नी ने पूछा- आपने मेरे लिये कितना महंगा हार खरीदा है! कार न खरीदकर हार क्यों खरीदा?

जटाशंकर ने उसका चेहरा देखा और ठंडे शब्दों में कहा- क्योंकि हार नकली आता है पर कार तो नकली नहीं आती !

सुनते ही जटाशंकर की पत्नी समझ गई कि मुझे नकली हार थमाया गया है। मैं व्यर्थ में इतरा रही थी।

हमारा मन भी इसी प्रकार नकली पदार्थ प्राप्त करके इतरा रहा है। नकली को असली मानना ही तो मिथ्यात्व है। वस्तु की यथार्थता का बोध होना ही सम्यक्त्व है।

बैंगलोर में प्याऊ का उद्घाटन

बैंगलोर नगर में श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के अन्तर्गत श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद एवं श्री जिनदत्त-कुशलसूरि जैन सेवा मंडल द्वारा रहगीरों के लिये शीतल पानी उपलब्ध कराने हेतु ग्रीष्मकालीन प्याऊ का उद्घाटन ता. 5 मई 2016 को स्थानीय पार्षद एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में किया गया। मानव

साध्वी डॉ. श्री विज्ञांजनाश्रीजी म. को डॉक्टरेट पद अर्पण समारोह

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

श्री सूरत महानगरे

कुशल वाटिका में निर्माणाधीन

श्री मुनि सुव्रत स्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी में

बिराजमान होने वाली प्रतिमाजी के

भराने के चढ़ावे निमित्त

सादर आमंत्रण

शुभ मुहूर्त्त : वैशाख सुदि 6 गुरुवार, ता. 12.5.2016 प्रात: 8.00 बजे

पावन निश्रा
पू. गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
आदि ठाणा
पू. उपाध्याय प्रवर
श्री मनोज्ञसागरजी म.सा.
आदि ठाणा

पावन सानिध्य
पू. साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म.
आदि ठाणा
पू. बहिन म.
डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म
आदि ठाणा

सकल श्रीसंघ से पधारने का हार्दिक निवेदन है

निवेदक

श्री कुशल वाटिका जैन संघ

पाल-अडाजन रोड़, R.T.O. ऑफिस के सामने, सूरत (गुजरात)

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408